CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता का अध्ययन करना

सीमा भार्गव
एम.एड.प्रशिक्षणार्थी
श्रीमती रामकुमारी टीचर्स ट्रेनिंग
कॉलेज, मुकन्दगढ़ मण्डी, झुन्झुनूं
Email- seemabhar123@gmail.com, Mobile-94613 59161

First draft received: 26.11.2023, Reviewed: 19.12.2023, Accepted: 23.12.2023, Final proof received: 29.12.2023

सार-संक्षेप

दुश्चिन्ता को हम विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं का समावेश मान सकते हैं क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। हर मनुष्य अपने में आत्मगौरव का एक स्तर बनाये रखता है। यह गौरव तब तक बना रहता है जब कि व्यक्ति असफलताओं से दूर बना रहता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनुष्य कभी असफल ही न हो, जीवन में असफलताएं तो आती है लेकिन व्यक्ति अपनी योग्यता व विवेक से असफलताओं से संघर्ष करता है और पराभूत करके लक्ष्य प्राप्ति कर लेता है। लक्ष्य प्राप्ति के साथ ही तनाव, निराशा और आत्महीनता समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि लक्ष्य प्राप्ति सुगमता से नहीं होता। इसमें व्यक्ति को कई बाधाओं का समाना करना पड़ता है। तब कहीं वह लक्ष्य तक पहुंचता है। यही बाधापूर्वक स्थिति दुश्चिन्ता कहलाती है। व्यक्ति इन दुश्चिन्ताओं से ग्रसित होकर संतप्त हो जाता है और स्वयं को बहुत दुखी महसूस करता हैं।

मुख्य शब्द : *दुश्चिन्ता, तनाव, निराशा, आत्महीनता आदि*

प्रस्तावना

21 वीं सदी को हम यदि मीडिया की सदी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये आयामों द्वारा शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियों का पहाड़ सा खड़ा कर दिया जिसमें मीडिया की लोकप्रियता सर्वत्र छायी रही। मीडिया ने न केवल वर्तमान में अपितु स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय तथा स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक अभिलेख प्रस्तुत किया है।

दुश्चिन्ता को हम विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं का समावेश मान सकते हैं क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। हर मनुष्य अपने में आत्मगौरव का एक स्तर बनाये रखता है। यह गौरव तब तक बना रहता है जब कि व्यक्ति असफलताओं से दूर बना रहता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनुष्य कभी असफल ही न हो, जीवन में असफलताएं तो आती है लेकिन व्यक्ति अपनी योग्यता व विवेक से असफलताओं से संघर्ष करता है और पराभूत करके लक्ष्य प्राप्ति कर लेता है। लक्ष्य प्राप्ति के साथ ही तनाव, निराशा और आत्महीनता समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि लक्ष्य प्राप्ति सुगमता से नहीं होता। इसमें व्यक्ति को कई बाधाओं का समाना करना पड़ता है। तब कहीं वह लक्ष्य तक पहुंचता है। यही बाधापूर्वक स्थिति दुश्चिन्ता कहलाती है। व्यक्ति इन दुश्चिन्ताओं से ग्रसित होकर संतप्त हो जाता है और स्वयं को बहुत दुखी महसूस करता है।

इस प्रकार शोधकर्त्री ने सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता के बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन कर सोचा कि - विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता पर सामाजिक मीडिया का क्या प्रभाव पड़ता है? उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकर्त्री ने **''सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता का अध्ययन''** विषय पर शोध करने का निर्णय लिया।

अध्ययन का महत्व

कक्षाओं के सन्दर्भ में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका के क्रम में शैक्षिक चेतना की प्रक्रिया के रूप में साामजिक मीडिया के प्रभावों के शोध निष्कर्षों के स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता है क्योंकि सामाजिक मीडिया द्वारा प्रसारित ज्यादातर कार्यक्रम इतने अनौपचारिक होते जा रहें हैं कि उनका उद्देश्य क्या है? स्पष्ट नहीं होता।

दुश्चिंता एक दीर्घकालीन पेचदगी से पूर्ण संवेगात्मक स्थिति है जिसका सम्पूर्ण अंश डर या आंशा है जो कई प्रकार से स्वाभाविक है और मानसिक व्याधियों का द्योतक है। दुश्चिंता का संबंध ऐसी स्थिति से है जिसमें कई प्रकार से संवेग सम्मिलित हो जाते है। इससे किसी भावी स्थिति को देखकर आंशका या भय की अनिवार्य उपस्थिति होती है। यही भय एवं आंशका मानसिक असंतुलन पैदा करता है। दुश्चिंता जन्मजात नहीं होती है बल्कि व्यक्ति वातावरण में रहकर उसे सीखता है। व्यक्ति दूसरों को अपमानित एवं प्रताड़ित होते देखता है वो सीखता है कि उस प्रकार की स्थिति विशेष की प्रडताड़ना या अपमान के रूप में सामने आती है और जब वह अपने बारे में उसी प्रकार की स्थिति को सोचता है जिसके परिणामस्वरूप दुश्चिंता का जन्म होता है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता का अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है, बल्कि सरकारी एवं निजी विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता को सामाजिक मीडिया से जोड़कर शोध अध्ययन आज तक नहीं हुआ है। अतः इन विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता का अध्ययन कर विद्यार्थियों, संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

अध्ययन का औचित्य

पूर्व में हुए अध्ययनों के अतिरिक्त इस दिशा में अलग-अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन ''सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता का अध्ययन'' पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं विद्यार्थियों के लिए

फलदायी होगा, जिससे हम सामाजिक मीडिया के द्वारा विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाली दुश्चिन्ता को कम करने में संभव हो सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता का अध्ययन करना

अध्ययन के उद्देश्य

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

- प्रस्तुत शोध राजस्थान राज्य तक सीमित है।
- शोधकर्त्री ने जयपुर संभाग के जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर, झुंझनू जिलों में संचालित सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यालयों को चयनित किया है।
- शोधकार्य में कुल ८०० विद्यार्थी (सरकारी ४०० एवं निजी ४००) का चयन किया गया है।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

दुश्चिन्ता मापनी

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा ए.के.पी. सिन्हा एवं एल.एन. के सिन्हा द्वारा निर्मित मापनी को उपयोग में लिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R. Value की गणना की जायेगी।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

विद्यार्थी	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R.. Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
सरकारी	400	22.35	5.64	1.85	सार्थक अन्तर नहीं है।	
निजी	400	20.64	4.25			

(df=N_1+N_2 &2=400+400&2=798)

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् सरकारी एवं निजी विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया से उत्पन्न दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

किसी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है। शोधकर्त्री ने समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया है। उक्त शोध मानव के दृष्टिकोण को मध्य नजर रखते हुए सार्थक सिद्ध होगा। उक्त शोध विद्यार्थियों में सामाजिक मीडिया द्वारा व्याप्त तनाव को दूर करने की सोच विकसित कर सकेगा। विद्यार्थी के संदर्भ में कोई भी अध्ययन किया जाय तो वह सार्थक ही होगा क्योंकि इस दिशा में प्रत्येक अध्ययन फलदायी तथा समाज व राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान करने वाले होते हैं। प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों के तनाव को कम करने के प्रति जागरूक करने का प्रयत्न करेगा। यह कार्य समाजोपयोगी तथा विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा, जिससे हमें विद्यार्थियों के वर्तमान स्वरूप, भावी स्वरूप का अध्ययन सम्भव हो सकेगा।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. शर्मा, जयन्ती — उच्च माध्यमिक के विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता एवं अध्ययन स्तर आदतों का अध्ययन करना, सरदारशहर, उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, 2003.
2. पाण्डेय, रामशक्ल — शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन, 2003.
3. वाजपेयी, एस. आर. — सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण, कानपुर, किताब घर, 1967.
4. सिंह, एस.पी — सांख्यिकी–परिमाणात्मक विश्लेषण, नई दिल्ली, ए. नन्द एण्ड कम्पनी लिमिटेड, 1984.
5. रस्तोगी, कृष्ण गोपाल — मानवीय मूल्य विकास व्यावहारिक आचरण, रा. मु. वि. नई दिल्ली, 2001.